आरती - जय जगदीश हरे ।

ओम् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ।। ओम् जय ...।।

जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का, । स्वामी दुःख ।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तनका ।। ओम् जय ...।।

माता पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मै किसकी । स्वामी शरण ।
तुम बिना और न दूजा, आस करूं जिसकी ।। ओम् जय ...।।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी । स्वामी तुम ।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ।। ओम् जय ...।।

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता । स्वामी तुम ।
मै मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ।। ओम् जय ...।।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति । स्वामी सब ।
किस विध मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ।। ओम् जय ...।।

दीनबन्धु दुःख-हर्ता, तुम रक्षक मेरे । स्वामी तुम ।
करुणाहस्त बढाओ, शरण पडा तेरे ।। ओम् जय ...।।

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा । स्वामी पाप ।
श्रद्धा भक्ति बढाओ, संतन की सेवा ।। ओम् जय ...।।

तन मन धन सब कुछ है तेरा
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ।। ओम् जय ...।।